International Journal of Advanced Research and Development

International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 90-91

पृथ्वीराज रासो के मुख्य पात्र पृथ्वीराज चौहान का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

महिमा सक्सेना

पी–एच.डी. (हिन्दी), सी–535, अस्था शहर, रुनकाता, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत लघु शोध का आशय प्राचीन ग्रंथ "पृथ्वीराज रासो" के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन है, इस लघु–शोध के अन्तर्गत मुख्य पात्र पृथ्वीराज चौहान का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द: पृथ्वीराज रासो, मनोवैज्ञानिक।

प्रस्तावना

इस महाकाव्य का विषय पृथ्वीराज चौहान और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलों के चरित्रों से सम्बन्धित है वैसे यह काव्य भी भिन्न–2 प्रकार के छन्दों से विभूषित अनेक प्रकार के काव्यों का एक ऐसा ग्रंथ है कि इसे हम किसी एक प्रकार के काव्य की संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते हैं।

मनोविज्ञान के अन्तर्गत सभी प्राणियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। व्यवहार के आधार पर ही बहुत सी बातों की पुष्टि होती है, किन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है न कि किसी पदार्थ का, इसी वस्तुस्थिति के कारण मनोविज्ञान तथा अन्य विज्ञानों में एक मौलिक भेद आ जाता है।

मनोविज्ञान का विषय मानव–मस्तिष्क से नियंत्रित मानव व्यवहार है। लाख चेष्टा करने पर भी हम मानव–मस्तिष्क पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त नहीं कर सकते।

पृथ्वीराज चौहान अपने समय के अद्वितीय योद्धा थे एवं बहुत परिश्रमी थे। "किया हुआ परिश्रम एक विशिष्ट प्रक्रिया के द्वारा फल बनता है, इसमें देर लगती है, और कठिनाई भी आती है।"[1] साधारणतया यदि विचार किया जाये तो पृथ्वीराज रासो पर शोध करना अति परिश्रम का कार्य है, एवं इस महाकाव्य का अर्थ जानना भी कठिनतम की सूची में सम्मिलित है।

कहा जा सकता है कि परिश्रमी स्वभाव उनकी मूल प्रवृत्ति था एवं "मूल प्रवृत्ति नहीं भुलाई जा सकती। आदत के सदृश इसके स्मरण के लिये अभ्यास की आवश्यकता नहीं।"[2]

"पृथ्वीराज रासो" में अनेक स्थानों पर पृथ्वीराज के प्रेम का वर्णन है, एक स्थान पर उनका पद्मावती के प्रति प्रेम वर्णित है–

"दिष्षत पन्थ दिल्ली दिसांन,
सुष भयौ सूक जब मिल्यौ ऑन।[3]

यह उनका प्रेम ही था कि वह पद्मावती को लेने जा रहे थे, पद्मावती शुक के मुख से पृथ्वीराज के आगमन का संदेश मिलते ही प्रसन्न हो जाती है।

संदेस सुनत आनन्द नैन,
उमगिय बाल मनमथ्य सैन।[4]

सामान्यतः रासो में अनेक स्थानों पर प्रेम का वर्णन है, किन्तु पद्मावती वर्णन उच्चकोटि का है। प्राचीन काल में वीर पुरुषों के स्वभाव में प्रेम मुख्य प्रवृत्ति के रूप में दृष्टिगोचर होता है, पृथ्वीराज इसका अनुपम उदाहरण हैं।

रासो में एक स्थान पर पृथ्वीराज अपने चाचा कन्ह से कहते हैं कि आप आँख पर पट्टी बाँधे रहा कीजिये–

"करी अरज प्रथिराज बर। जो मानौ इक कन्ह।।
सभा बुराई जो मिटै। चष बंधि पट्ट रतन।।"[5]

मन की अवस्था असन्तुलित होती है तो प्रमुख उपाय मनोदशा के संशोधन का सामने आता है।

सम्भवतः पृथ्वीराज भी एक अदृश्य बोझ से स्वयं को मुक्त करना चाहते थे अतएव वे अपने चाचा से आंखों पर पट्टी बांधने की प्रार्थना करते हैं, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनके चाचा कन्ह किसी अप्रिय कार्यशैली पर पुनः क्रोधित हों "किन्तु अव्यक्त आशंकायें, दुश्चिंताएं, कुकल्पनाएं संस्काराधीन होती हैं"।[6] तथापि वे इन तथ्यों से अनभिज्ञ रहे होंगे। वे बार–बार आत्म–प्रदर्शन की प्रवृत्ति का प्रदर्शन करते जान पड़ते हैं। आत्म–प्रदर्शन की प्रवृत्ति का रूप सामाजिक होता है, "इस प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति ऐसा कार्य करना चाहता है जिससे लोग उसकी प्रशंसा, अथवा स्मरण करें।"[7]

इसके उपरान्त वे स्वयं जड़ाउ पट्टी बनवाकर स्वयं कन्ह की आँखों पर बांध देते हैं।

"पाटी बांधिय कन्ह चष। इह ओपम करि अष्षि।।
तन सरवर जल बीर रस। ओटा वंधि सुरष्षि।।[8]

यहाँ पृथ्वीराज में पराहम् की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है यह "व्यक्ति के नैतिक पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है, वह व्यक्ति को ऐसे समस्त क्रिया–कलाप करने के लिये वर्जित करता है जो सामाजिक रीतियों, मान्यताओं, आदर्शों के प्रतिकूल होते हैं।"[9]

---

[1] मानसिक संतुलन, श्रीराम शर्मा आचार्य
[2] मनोविज्ञान एवं शिक्षा, पृ. 176, डॉ. सरयू प्रसाद चौबे
[3] चन्दबदराई कृत पृथ्वीराज रासो, पृ. 154–155 डॉ. हरिहर नाथ टंडन
[4] वही चन्दवरदाई
[5] पृथ्वीराज रासो, भाग–1, पृ.298 चन्दवरदाई
[6] चिंताओ से छुटकारे का मार्ग, पृ. 9 पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
[7] मनोविज्ञान एवं शिक्षा, पृ. 218 डॉ. सरजू प्रसाद चौबे
[8] पृथ्वीराज रासो, भाग–1, पृ.298 चन्दवरदाई
[9] असामान्य मनोविज्ञान, पृ. 168 डॉ. पी.के. तिवारी, डॉ. के.सी. वशिष्ठ

प्रथम भाग में एक स्थान पर पृथ्वीराज के क्रोधित होने का वर्णन है, क्रोध का कारण नाहर राय द्वारा अपनी कन्या का पृथ्वीराज से विवाह नहीं करना था।

"बढ़ि अवाज अजमेर। बंपि कग्ग्द चौरासिम।।
परिहारह सब सेन। धर्म परिहरि बढ्यौ भ्रम।।"[10]

पृथ्वीराज बहुत गुणी थे, सामान्यतया ग्रंथ के आधार पर कहा जा सकता है कि उनको जीवन में वे समस्त साधन जो वे चाहते थे, प्राप्त नहीं थे।

लोगों को उनकी मनचाही चीजें नहीं मिलने का एकमात्र कारण यह है कि वे इस बारे में ज्यादा सोच रहे होते हैं कि वे क्या नहीं चाहते हैं बजाय इसके कि वे क्या चाहते हैं, अपने विचारों पर गौर करना एवं शब्दों को सुनना अति आवश्यक है क्योंकि नियम तो शाश्वत है, इसमें चूक सम्भव नहीं।

आकर्षण का नियम इस बात की परवाह नहीं करता है कि आज किसी किसी को अच्छा मानते हैं या बुरा, आप उसे चाहते हैं या नहीं। यह नियम विचारों पर प्रतिक्रिया करता है। इसलिये अगर माप कर्ज के पहाड़ को देखकर बुरा महसूस कर रहे हैं तो आज ब्रह्मांड में यह संकेत भेज रहे हैं, मैं इतने भारी कार्य से बुरा महसूस कर रहा हूँ। आप इसे अपने अस्तित्व के हर स्तर पर महसूस कर रहे हैं ..... परिणाम के स्वरूप आपको यही और ज्यादा मिलेगा।

"आकर्षण का नियम नैसर्गिक नियम है। यह निष्पक्ष है और अच्छी या बुरी चीजों में भेद नहीं करता है, यह आपके विचारों को आपके जीवन में साकार कर देता है, जिस भी बारे में सोचते हैं आकर्षण का नियम आपको वही देता है।"[11] पृथ्वीराज के विषय में भी यह पूर्णतया सत्य प्रतीत होता है।

"जिज्ञासा की मूल प्रवृत्ति सभी चेतन प्राणियों में पायी जाती है"[12] यह प्रवृत्ति आवश्यक भी है यदि जिज्ञासा की प्रवृत्ति न हो तो वह व्यक्ति दिशाहीन होगा।

पृथ्वीराज द्वारा माता से स्वप्न का वृतान्त कहने का वर्णन है। जिसमें जिज्ञासा की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है

"सुपनंतर चहुवान, जाय जुग्गिनिपुर मंडिय।।"[13]

एक स्थान पर पृथ्वीराज की जिज्ञासा पुनः प्रकट होती है और वे प्रश्न करते हैं–

"फिरि राजन यों उच्चरिय। सुनि दुजराज सुजान।।
पिता व्याह क्यों कर रचिय। क्यों प्रोहित पठवान।।"[14]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पृथ्वीराज रासो भाग–1, द्वितीय नवीन संस्कार नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, नयी दिल्ली, संपादक – मोहन लाल विष्णुलाल पंड्या, श्याम सुन्दर दास, कुंवर कन्हैया जू, सं. 2051 वीं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के शिक्षा विभाग से प्राप्त अनुदान (आंशिक वित्तीय सहायता) से प्रकाशित। राजाज्ञा सं. एफ 5–154/92 डा. आई. (एल) दिन. 18 मार्च 1993 ई. मुद्रक– श्री नारायण, नागरी मुद्रण, नागरी प्रचारिणी सभा, विशेश्वर गंज, वाराणसी। पृ. 15
2. मानसिक संतुलन, श्री राम शर्मा आचार्य, www.awgp.org/ www.akhandjyoti.org (1)
3. मनोविज्ञान एवं शिक्षा, डॉ. सरयू प्रसाद चौबे (चतुर्थ परिवार्द्धित और संशोधित संस्करण), लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, प्रकाशक, हॉस्पीटल रोड, आगरा,
4. चन्दवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो पद्मावती समय, डॉ. हरिहर नाथ टंडन, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, नवीनतम संशोधित संस्करण–2010, पृ. 8
5. चिंताओं से छुटकारे का मार्ग, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, प्रकाशक– गायत्री तपोभूमि, मथुरा–281003, प्रथम संस्करण–2004, मुद्रक– युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा, पृ. 9.
6. असामान्य मनोविज्ञान, डॉ. पी.के. तिवारी, डॉ. के.सी. वशिष्ठ, साहित्य प्रकाशन, आगरा प्रथम संस्करण, 1991, मुद्रक ज्योति प्रिण्टर्स, नौबस्ता, आगरा, पृ. 168.
7. The Secret, रहस्य, रॉन्डा बर्न, अनुवाद – डॉ. सुधीर दीक्षित, मंजुल पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, 10, निशाद कॉलोनी, भोपाल, भारत – 462003

[10] पृथ्वीराज रासो, भाग–1, पृ.334 चन्दवरदाई
[11] The Secret रहस्य, पृ. 13 रॉन्डा बर्न
[12] मनोविज्ञान एवं शिक्षा, पृ. 212 डॉ. सरयू प्रसाद चौबे
[13] पृथ्वीराज रासो, भाग–1, पृ.260 चन्दवरदाई
[14] पृथ्वीराज रासो, भाग–1, पृ.701 चन्दवरदाई